भारतीय संस्कृति सर्वस्वम्

गोस्वामी तुलसीदास जी द्वारा संस्कृत मे रचित

हनुमान चालीसा,संकट मोचन हनुमानाष्टक और व्रजरंग बाण अवधी भाषांतरण

प्रकाशन : रामायणम् प्रिंटिंग प्रेसम्

प्रकाशक :-राघवेन्द्र शुक्ल

संवत् विक्रमी 1961 लवपुरी (लाहौर),½ अनारकली बाजार लवपुरी

दोहा

श्री गुरु चरण सरोज रज
निज मनु मुकुर सुधारि।
बरनऊँ रघुवर विमल
जसु, जो दायकु फल
चारि॥

बुद्धिहीन तनु जानिके,
सुमिरौ पवन कुमार। बल
बुद्धि विद्या देहु मोहि,
हरहु कलेस विकार॥

चौपाई

जय हनुमान ज्ञान गुण
सागर,
जय कपीस तिहुँलोक
उजागर।

रामदूत अतुलित बल
धामा,
अंजनि पुत्र पवनसुत
नामा॥

महावीर विक्रम व्रजरंगी*,
कुमति निवार सुमति के
संगी।

कंचन वरन विराज
सुवेसा,
कानन कुण्डल कुंचित
केसा॥

हाथ वज्र औ ध्वजा
बिराजै,
काँधे मूँज जनेऊ साजै।

शंकर स्वयं केसरी
नंदन**,
तेज प्रताप महा जग
वंदन॥

विद्यावान गुनी अति
चातुर,
राम काज करिवे को
आतुर।

प्रभु चरित्र सुनिवे को
रसिया,
राम लखन सीता मन
वसिया॥

सूक्ष्म रूप धरि सियहि
देखावा,
विकट रूप धरि लंक
जरावा।

भीम रूप धरि असुर
सँहारे,
रामचंद्र के काज सँवारे।।

लाय सजीवन लखन
जियाये,
श्री रघुवीर हरषि उर
लाये।

रघुपति कीन्ही बहुत
बड़ाई,
तुम मम प्रिय भरतहि
सम भाई॥

सहस वदन तुम्हरो जस गावै,
 अस कहि श्रीपति कंठ लगावै।

सनकादिक ब्रह्मादि मुनीसा,
 नारद सारद सहित अहीसा॥

यम कुबेर दिगपाल जहाँ ते,
 कवि कोविद कहि सके कहाँ ते।

तुम उपकार सुग्रीवहि कीन्हा,
 राम मिलाय राज पद दीन्हा॥

तुम्हरो मन्त्र विभीषण माना,
 लंकेश्वर भए सब जग जाना।

युग सहस्त्र योजन पर भानू,
 लील्यो ताहि मधुर फल जानू॥

प्रभु मुद्रिका मेलि मुख माही,
 जलधि लाँघि गये अचरज नाही।

दुर्गम काज जगत के
जेते,
सुगम अनुग्रह तुम्हरे
तेते॥

राम दुआरे तुम रखवारे,
होत न आज्ञा विन
पैसारे।

सब सुख लहै तुम्हारी
सरना,
तुम रक्षक काहू को
डरना।।

आपन तेज सम्हारो आपे,
तीनो लोक हाँक ते काँपे।

भूत पिशाच निकट नहि
आवै,
महावीर जब नाम
सुनावै॥

नासै रोग हरै सब पीरा,
जपत निरन्तर हनुमत
वीरा।

संकट ते हनुमान छुडावै,
मन क्रम वचन ध्यान
जो लावै॥

सबपर राम राज सिर
ताजा***,
तिन के काज सकल तुम
साजा।

और मनोरथ जो कोई
लावै,
सोइ अमित जीवन फल
पावै॥

चारो युग परताप
तुम्हारा,
है परसिद्ध जगत
उजियारा।

साधु सन्त के तुम
रखवारे,
असुर निकन्दन राम
दुलारे॥

अष्टसिद्धि नौ निधि के
दाता,
अस वर दीन जानकी
माता।

राम रसायन तुम्हरे
पासा,
सादर रहो रघुपति के
दासा****।।

तुम्हरे भजन राम को
भावै,
जनम जनम के दुख
विसरावै।

अंतकाल रघुवरपुर जाई,
जहाँ जन्म हरिभक्त
कहाई॥

और देवता चित्त न धरई,
हनुमत सेइ सर्व सुख करई।

संकट कटै मिटै सब पीरा,
जो सुमिरै हनुमत बलवीरा॥

जै जै जै हनुमान गोसाई,
कृपा करहु गुरुदेव की नाई।

यह शत बार पाठ कर जोई*****,
छूटहि बन्दि महा सुख होई॥

जो यह पढै हनुमान चालीसा,
होय सिद्धि साखी गौरीसा।

तुलसीदास सदा हरि चेरा,
कीजै नाथ हृदय महँ डेरा॥

दोहा

पवनतनय संकट हरन,मंगल मूरति रूप।
राम लखन सीता सहित, हृदय बसहु सुर भूप।

संकटमोचन
हनुमानाष्टक

बाल समय रवि भक्षि
लियो तब तीनहुँ लोक
भयो अँधियारो।

ताहि सो त्रास भयो जग
को यह सङ्कट काहु सो
जात न टारो।

देवन आनि करी विनती
तब, छाँडि दियो रवि
कष्ट निवारो।

को नाहि जानत है जग
मे, कपि सङ्कट मोचन
नाम तिहारो।

वालि की त्रास कपीस
वसै,गिरि जात महाप्रभु
पंथ निहारो।

चौकि महा मुनि श्राप
दियो तब,चाहिय कौन
विचार विचारो।

कै द्विज रूप लिवाय
महाप्रभु,सो तुम दास के
शोक निवारो।

को नाहि जानत है जग
मे, कपि सङ्कट मोचन
नाम तिहारो।

अंगद के सङ्ग लेन गये
सिय,खोज कपीस यह
वैन उचारो।

जीवत ना बचिहौ हमसो
जु, विना सुधि लाए इहाँ
पगु धारो।

हेरि थके तट सिंधु सबै
तव,लाय सिया-सुधि
प्राण उबारो।

को नाहि जानत है जग
मे,कपि सङ्कट मोचन
नाम तिहारो।

रावणत्रास दई
सियको,सब राक्षसि सो
कहि शोक दिवारो******।

ताहि समय हनुमान
महाप्रभु,जाय महा
रजनीचर मारो।

चाहत सीय अशोक सो
आगि सु,दै प्रभु मुद्रिका
शोक निवारो।

को नाहि जानत है जग
मे,कपि सङ्कट मोचन
नाम तिहारो।

बाण लग्यो उर लछिमन
के तब,प्राण तजे
रावण******* मारो।

दै वचन वैद्य सुषेण
तबै********,गिरि द्रोण
सुवीर उपारो।

आनि सजीवन हाथ दई
तब,लक्षिमण के तुम
प्राण उबारो।

को नाहि जानत है जग
मे,कपि सङ्कट मोचन
नाम तिहारो।

मेघनाथ********* युद्ध
अजान कियो तब,नाग
कि फाँस सबै सिर डारो।

श्रीरघुनाथ समेत सबै
दल,मोह भयो यह संकट
भारो।

आनि खगेस तबै हनुमान
जु,बन्धन काटि सुत्रास
निवारो।

को नाहि जानत है जग
मे,कपि सङ्कट मोचन
नाम तिहारो।

बंधु समेत जबै
अहिरावण,लै रघुनाथ
पताल सिधारो।

देविहि पूजि भली विधि
सौ,बलि देऊँ सबै मिलि
मन्त्र विचारो।

जाय सहाय भयो तब
ही,अहिरावण सैन्य
समेत संहारो।

को नाहि जानत है जग
मे,कपि सङ्कट मोचन
नाम तिहारो।

काज कियो बड देवन के
तुम,वीर महाप्रभु देखि
विचारो।

कौन सो संकट मोर गरीब
को,जो तुमसे नहि जात है
टारो।

वेगि हरो हनुमान
महाप्रभु,जो कुछ संकट
होय हमारो।

को नाहि जानत है जग
मे,कपि सङ्कट मोचन
नाम तिहारो।

दोहा

लाल देह लाली लसे,अरू धरि लाल लंगूर। वज्र देह दानवदलन,जय जय जय कपिसूर॥

बजरंग बाण

॥ दोहा ॥

निश्चय प्रेम प्रतीत ते, विनय करे सनमान। तेहि के कारज सकल शुभ, सिद्ध करे हनुमान॥

॥ चौपाई ॥

जय हनुमत संत हितकारी, सुन लीजै प्रभु अरज हमारी। जन के काज विलम्ब न कीजै, आतुर दौरि महा सुख दीजै।

जैसे कूदि सिन्धु महि पारा, सुरसा वदन पैठि विस्तार। आगे जाई लंकिनी रोका, मारेहु मुष्टि********** गई सुर लोका।

जाय विभीषण को सुख
दीन्हा, सीता निरखि
परमपद लीन्हा। बाग
ऊजारि सिन्धु महँ बोरा,
अति आतुर यम कातर
तोरा।

अक्षय कुमार को मार
संहारा, लूम लपेटि लंक
को जारा। लाह समान
लंक जरि गई, जय जय
जय धुनि सुरपुर भई।

अब विलम्ब केहि कारण
स्वामी, कृपा करहु उर
अन्तर्यामी। जय जय
लक्ष्मण प्राण के दाता,
आतुर होय दुःख करहु
निपाता।

जै गिरिधर जै जै सुख
सागर, सुर समूह समरथ
भट नागर। ओ३म् हनु
हनु हनु हनुमंत हठीले,
वैरिहि मारु वज्र की
कीले।

गदा वज्र लै वैरिहि मारो,
महाराज प्रभु दास
उचारो। ओ३म् कार हुँकार
प्रभु धावो, वज्र गदा हनु
विलम्ब न लावो।

ओ३म् ह्रीं ह्रीं ह्रीं हनुमन्त
कपीशा,ओ३म् हुँ हुँ हुँ हनु
उर शीशा।

सत्य होहु हरि शपथ पाय
के,राम दूत धरु मारू
धाय के॥

जय जय जय हनुमंत
अगाधा, दुःख पावत जन
केहि अपराधा।

पूजा जप तप नेम
अचारा, नहि जानत हो
दास तुम्हारा।

वन उपवन मग,गिरि गृह
मॉही, तुम्हरे बल हम
डरपत नाही।

पाँय परौ कर जोरि
मनावौ, यहि अवसर अब
केहि गोहरावौ।

***********जय अञ्जनि
कुमार बलवन्ता, शंकर
स्वयं वीर हनुमन्ता।

वदन कराल काल कुल
घातक, राम सहाय सदा
प्रति पालक।

भूत प्रेत पिशाच
निशाचर, असुर वैताल
काल मारी मर।

इन्हे मारु तोहि शरण
राम की, रखु नाथ मर्यादा
नाम की।

जनक सुता हरि दास
कहावो, ताकी शपथ
विलम्ब न लावो।

जै जै जै धुनि होत
अकासा, सुमिरत होत
दुसह दुख नासा।

चरण शरण कर जोरि
मनावौ, यहि अवसर अब
केहि गोहरावौ।

उठु उठु चलु तोहि राम
दोहाई, पांय परौं कर
जोरि मनाई।

ओ३म् चं चं चं चं चपल
चलन्ता,ओ३म् हनु हनु
हनु हनु हनुमन्ता।

ओ३म् हँ हँ हांक देत कपि
चंचल,ओ३म् सं सं सहमि
पराने खल दल।

अपने जन को तुरत
उबारो, सुमिरत होय
आनन्द हमारो।

यह व्रजरंग बाण जेहि
मारे, ताहि कहौ फिर
कौन उबारे।

पाठ करे व्रजरंग बाण की,
हनुमत रक्षा करै प्राण
की।

यह व्रजरंग बाण जो
जापै, ताते भूत प्रेत सब
कापै।

धूप देय अरु जपै
हमेशा,ताके तन नहि रहै
क्लेशा॥

॥ दोहा ॥

प्रेम प्रतीतहि कपि भजै,
सदा धरै उर ध्यान। तेहि
के कारज सकल शुभ,
सिद्ध करै हनुमान॥

टिप्पणियाँ

वह श्लोक जो आज कल गलत लिखा मिलते है।

*महावीर विक्रम बजरंगी

,कुमति निवार सुमति के संगी।

**शंकर सुवन केशरी नंदन।

तेज प्रताप महा जग वंदन।।

टिप्पणी - हनुमान जी शंकर जी के पुत्र नही बल्कि स्वयं शंकर जी ही हनुमान जी थे।

***सब पर राम तपस्वी राजा।

जिनके काज सकल तुम साजा।।

टिप्पणी - जब भरत ने राम जी से कहा था कि आप तपस्वी होकर ही अयोध्या की सीमा मे ही रहे और दोनो कर्तव्य निभाएँ। तब राम जी ने स्वयं कहा कि जो तपस्वी होते है वो राजा नही हो सकते है। जैसे तुलसीदास जी ने स्वयं रामचरितमानस मे लिखा है

"निज नगर ससुरारी सम जानी।

रहु तात बनवास निभानी।।

राजकाज मोहि सौ तजि दीन्हा।

सचिव प्रजा सब करहुँ सजीन्हा।।

तुम तपसी बन नगर बसौ।

राजकाजु हमरे सौ नसौ।"

"तात! तपस्वी जे बन जाही।

राज धरम तिन्ह के न साही।।

जौ धरमु राखौ बनवासा।

नहि धरइ सकौ राज पासा।।

राजा बनि तपसी धरमु त्यागौ।

तुलसी कथमि नीति अनुरागौ।।"(अयोध्या काण्ड चौपाई 256-57)

राम रसायन तुम्हरे पासा।

****सदा रहो रघुपति के दासा।।

*****जो शत बार पाठ कर कोई।

छुटहि बंदि महा सुख होई।।

******रावण त्रास दई सिय को,सब राक्षसी सो कहि शोक निवारो।

*******लै गृह वैद्य सुषेण समेत, गिरि द्रोण सुवीर उपारो।

********बाण लग्यो उर लछिमन के तब,प्राण तजे सुत रावणमारो।

टिप्पणी -

जबकि मूल प्रति ऐसा नही लिखा है उसमे लिखा है कि सुषेण वैद्य सुग्रीव के राज वैद्य थे और मेघनाथ ने नागास्त्र चलाया था। जैसे रामचरितमानस मे गोस्वामी तुलसीदास जी ने स्वयं कहा है -

सुग्रीव बोले विनय सनेही।

लछिमन मूर्छित भए कठिन देही।।

रावन प्रेषित शक्ति
घाता।

उर पर लागी विप्रबुद्धि
बाता।।

*********रावण युद्ध
अजान कियो तब,नाग
कि फाँस सबै सिर डारो।

**********जय अञ्जनि
कुमार बलवन्ता, शंकर
सुवन वीर हनुमन्ता।

**********आगे जाई
लंकिनी रोका, मारेहु लात
गई सुर लोका।

यह सब उस मूल प्रति मे
नही लिखा है।

रॉबर्ट सैंडमेन को
बलूचिस्तान के हिंगलाज
माता मंदिर से प्राप्त हुई
थी जिसे वह वहाँ से
इंग्लैंड लेकर गया।

जिसे मेरे पिताजी स्वर्गीय श्री राजेन्द्र शुक्ला जी ने स्वयं पढा था जिसे तुलसीदास जी ने संस्कृत मे लिखा था और उसमे उनकी वंशावली भी दी थी जिसे स्वयं तुलसीदास जी ने लिखा है ,क्योकि वह उस समय उसी मंदिर के उच्च पुजारी थे।

निष्कर्ष - जिन तुलसीदास जी ने एक ही चौपाई मे सूर्य से पृथ्वी की दूरी बताई हो वहा गलत कैसे लिख सकते है। यह सभी प्रकाशको की गलतिया है जो उन्होने इस बात पर ध्यान नही दिया।

संवत् 1958 की प्रथम प्रति मे हमने सिर्फ हनुमान चालीसा के शुद्ध पाठ दिया था। अब हम इस दूसरी आवृत्ति मे हमने हनुमान चालीसा, संकटमोचन हनुमानाष्टक और व्रजरंग बाण का भी शुद्ध पाठ प्रस्तुत किया है वो भी मूल तुलसीदास जी द्वारा रचित प्रति के आधार पर।

विशेष :- इस संस्करण मे हमने अपभ्रंश हो चुके शब्द को सही किया है जैसा मूल प्रति मे लिखा है बिल्कुल वैसा ही किया है

१- बजरंग - व्रजरंग २- ओं-ओ३म्